अध्ययन सामग्री

विषय - हिन्दी

वर्ग - स्नातक खण्ड - III

प्रश्न पत्र - VI

सुमन कुमारी
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
हरप्रसाद दास जैन महाविद्यालय
(आरा)

[redacted] - [redacted]

'रेखाचित्र'

रेखाचित्र

रेखाचित्र अंग्रेजी के स्केच शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। 'स्केच' चित्रकला का अंग है। इसमें चित्रकार कतिपय रेखाओं के द्वारा किसी वस्तु, व्यक्ति या दृश्य को चित्रित करता है। सामान्यतः 'स्केच' रेखाओं की अधिकता, सघनता और रंगों के विविध प्रयोगों से निर्मित चित्र माना जाता है। यह कला के विविध विधाओं में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

साहित्य के अन्तर्गत किसी रेखाचित्र की अभिधा प्राप्त है, वह कम-से-कम शब्दों में कलात्मक ढंग से किसी वस्तु या व्यक्ति या दृश्य का अंकन मात्र है। शब्द चित्रों के उतारने के माध्यम बनकर आते हैं, अतः कुछ लोगों ने रेखाचित्र को शब्द चित्र कहना प्रारंभ कर दिया है।

रेखाचित्र किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना या भाव का कम-से-कम शब्दों में मर्मस्पर्शी, भावपूर्ण और सजीव अंकन है। रेखाचित्र की विशेषता विस्तार में नहीं तीव्रता में होती है। रेखाचित्र पूर्ण नहीं, वह व्यक्ति, वस्तु, घटना आदि का एक निश्चित दृष्टि बिन्दु से प्रस्तुत किया गया प्रतिबिम्ब है जिसमें विवरण की न्यूनता के साथ-साथ तीव्र संवेदनशीलता बनी रहती है।

हिन्दी साहित्य में रेखाचित्र का ~~जन्म~~ विकास :- काव्य में रेखाचित्र का जन्म कविता के जन्म के साथ ही मानना चाहिए। कारण कि रेखाओं और वर्णों के द्वारा कविता चित्रों का निर्माण है। काव्यगत रेखाचित्र के साथ शब्द, स्पर्श, गन्ध और रस से भी सम्पुष्ट होता है। गद्य में ~~रेखाचि~~ रेखाचित्र का आरंभ आधुनिक काल की ही देन है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के कुछ निबन्धों तथा बालकृष्ण भट्ट के एकाध निबंध में भी रेखाचित्र की झलक मिलती है। विद्वानों के अनुसार पद्मसिंह शर्मा के 'पद्म पराग' के निबंधों में रेखाचित्र की झलक मिलती है। विद्वानों ने श्रीराम शर्मा से हिन्दी रेखाचित्र ~~का सूत्रपात~~ के विकास का आरम्भ माना है। किन्तु यह भी सही है कि रेखाचित्र का सूत्रपात पद्मसिंह शर्मा से ही हुआ है। ~~श्री~~ श्रीराम शर्मा की 'बोलती प्रतिमा' में रेखाचित्र के सभी गुण हैं। शर्मा जी के बाद सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के रेखाचित्र आते हैं।

सन् 1941 में महादेवी वर्मा का 'अतीत के चलचित्र' सामने आया। यह बहुत ही सुन्दर, आकर्षक व सफल रेखाचित्रों का संग्रह है। इसमें जीवन की मार्मिक अनुभूतियों का अंकन है।

महादेवी वर्मा के अलावा रेखाचित्रों के इतिहास में रामवृक्ष बेनीपुरी का नाम आता है। 'लालतारा', 'माटी की मूरतें', 'गेहूं और गुलाब' व 'मील के पत्थर' बेनीपुरी जी के प्रसिद्ध रेखाचित्र हैं। देवेन्द्र सत्यार्थी ने प्राय: भावात्मक रेखाचित्र लिखे हैं। उनका संग्रह 'रेखाएं बोल उठी' नाम से प्रकाशित हुआ। बनारसीदास चतुर्वेदी ने 'रेखाचित्र' पुस्तक लिखी। इनके अतिरिक्त कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर ने 'भूले हुए चेहरे', 'दीप जले शंख बजे', माखनलाल चतुर्वेदी ने 'समय के पांव', ~~कैलाश~~ कैलाशनाथ काटजू कृत 'कुछ स्मरणीय मुकदमे' विष्णु प्रभाकर 'जाने - अनजाने' ने रेखाचित्र साहित्य में पर्याप्त योगदान दिया है। मोहन राकेश की 'परिवेश' कृति में संस्मरणनुमा रेखाचित्रों में प्रभावी एवं चित्रमयता युक्त शैली का प्रयोग कर सफल रेखाचित्रों की योजना की है।